

पात्र-परिचय

पुरुष—

- १ हिमालय—पर्वतराज, हेमन्त ऋषि, गौरीक पिता ।
- २ नारद—देवर्षि, देवज्ञ ।
- ३ सप्तर्षि—शिवक दूत, षटक ।
- ४ शिव—महादेव ।
- ५ श्रीरामचन्द्र—भगवान् राम ।
- ६ ब्रह्मा—विधाता ।
- ७ इन्द्र—देवराज ।
- ८ विष्णु—प्रसिद्ध देवता ।
- ९ कामदेव—महादेवक ध्यान तोड़निहार ।



स्त्री—

- १ मनाइति—मएना, गौरीक माय ।
- २ गौरी—हिमालयक पुत्री पावेंती ।
- ३ रति—कामदेवक पत्नी ।



गौरीस्वयंवर-नाटिका

श्रीः

शोभी गौरी-स्वयंवर, काण्डहाराम बखान ।
 गौरी - शङ्कर करहि शुभ, पढ़हि सुनहि मतिमान् ॥१॥
 सज्जन जनकी परम प्रिय, सुनहि बाढ़त हुलास ।
 कुटिल मुढ़ अज्ञान जड़, सो करिहहि उपहास ॥२॥
 पुनः,
 श्री गुण पद पङ्कज सुमरि, हृदय सुमरि सियराम ।
 शारद^१ शेष महेश अज, पुरिअ सकल मनकाम ॥३॥
 वेद, विप्र, मुनि नारद, सुर^२, सनकादि, गन्धर्व ।
 शम्भु चरणरज बधि कै, देहु सुमति सुनि सर्व ॥४॥
 विघ्न हरन संकटतरन, सिद्धकरन गणनाह^३ ।
 सुमति उक्ति वर देहु मोहि, बरनी गौरि विवाह ॥५॥
 लम्बोदर करिवरवदन^४, एकरदन^५ अधिराम^६ ।
 पुरिअ मनोरथ मोर प्रभु, प्रणवत काण्डहाराम ॥६॥

मंगल गीत गणेशक--१

जय जय गिरिजा तनय गणेश ।
 तुअ गुन बरनि सकहि नहि शेष^१ ॥
 लम्बोदर तुअ गुण अनन्त ।
 सुर मुनि पाय सकहि नहि अन्त ॥

१—शारदा, शेषनाग, महादेव ओ परब्रह्म । २—देवता ओ सनक आदि ऋषि (ब्रह्माक पुत्र) । ३ - गणेश । ४ - हाथीक मुहवाला । ५ - एक दा बलकला ।
 ६ - सुन्दर । ७ - शेषनाग ।

कहें लागि बरनो मनुज^८ शरीर ।
गणनायक हर आरत^९ पीर ॥
गोचर^{१०} कर श्री कान्हाराम ।
विघ्न-हरण शुभ कर सभ ठाम ॥

भगवतीक गीत मालवरागे--२

जय जय! दुर्गा दुर्ग प्रताप ।
तुअ भुजबल डर दानव काप ॥
सिंह चढ़लि कर लेल कृपाण^{११} ।
कोपि चलल रण रूप भयान^{१२} ॥
दानव-बल दलि^{१३} कैल ओरान^{१४} ।
पिउल रुधिर नहि भेल अघान ॥
रसत^{१५} पसार दसन^{१६} विकराल ।
ऐसत अरिदल^{१७} कैल हत^{१८} काल ॥
चण्ड मुण्ड रण खण्डल डारी ॥
सुम्भ^२ निसुम्भ जुगल रण मारी ॥
महिष असुर रण कएल प्रकोप ।
ताहि १ निपाति^३ कएल अलोप^४ ॥
असुर निपाति सूरहि सख देल ।
तुअ रण विजय विदित जग भेल ॥
कान्हाराम भन गोचर बानी ।
सदा सभा सुभ करिय भयानी ॥

८ - मनुष्यक बेहूवाला । ९ - दुखीक पीड़ा हरत छवि । १० - दर्शन ।
११ - तहआदि । १२ - डराओन । १३ - मारि । १४ - अन्त । १५ - जोह ।
१६ - धति । १७ - एहि रूपे शत्रुक दलक । १८ - हत्या । १९ - तकरा ससाव ।
२० - अवश्य (मैचिली मे 'अलोपित' शब्दक अर्थ सुप्त ओ 'अपयान्त' शब्दक
अर्थ पर्याप्त होइछ) ।

१-जै जै । २-सम्भ । ३-नीपाति ।

कमलाजीक गीत मालवरागे--३

जय जय! कमला विमल तुअ वारि^१ ।
विभु-भगिनी जो उदधि^२ कुसारि ॥
कोड़ि पहाड़ धार बहु नीर ।
दरस परस^३ जल हर सभ पीर ॥
ताल सरोवर खण्डन कारी ।
... .. ५
... ..

(श्लोक)

शाके वेद-चडत्रि^६ ब्रह्म-मिलिते मासे शुभे माघवे,
७ पक्षे^७ छे तु सुधाकरस्य दिवसे चन्द्रस्य ८ ताते तिथी ।
गौरी-९ सम्भु-विवाह-सूतसक-कथा प्रारम्भ भाषाकुा
कामं^{१०} नाटकनृत्ययोः कथयते ॥ गौरी शिव पातु व ॥१॥

दुतरपि मालव रागे - ४

ग्रह^{११} सत संवत महि^{१२} हजार ।
एक कमी दए करव विचार ॥

१७९४ शाके वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, सोम दिन, सप्तमी तिथि मे
गौरी-शंकर विवाहोत्सव-कथा के भाषामे प्रारम्भ कय नाटक ओ नृत्य मे यथे-
च्छरूप से कहैत छी ओ गौरी-शंकर अर्हालीकनिक रक्षा करथु ॥१॥

२१-जल । २२-चन्द्रमाक बहिन (कमला=लक्ष्मी ओ चन्द्रमा समुद्र से
बहराएल छथि) । २३-समुद्रक पुत्री । २४-जलक दर्शन ओ स्पर्श सभ पीड़ा
के दूर कय देल । २५-तडाग । २६-नओ (ग्रह) सब ओ एक हजार=
१९०० मे एक कमी कय=१८९६ संवत् ।

४-जै जै । ५-(खण्डित) । ६-चडत्रि । ७-धीते । ८-तातस्तिथी ।
९-सम्भुवाह उत्सवकथा प्रारम्भ भाषाकुसं । १०-कामं । ११-कथयते ।
१२-महि ।

माघव^{२७} मास पच्छ इजोर ।
^{२८}सागर-१३ तिथि दिन सिन्धु - किशोर^{२९} ॥
 मन दय बुझब सकल मतिमान ।
 मास साल तिथि दिन प्रमाण ॥
 काण्हाराम सुमरि जगदम्ब ।
 गौरिस्वयंवर कैल आरम्भ ॥

दोहा

विमल^{३०} वंश 'गङ्गक' विदित, कायस्थ मेथिल जान ।
 हलधर दासक तनय^{३१} जो काण्हाराम मम नाम ॥१॥
 गोरि विवाह उछाह^{३२} जत, बरनी चरित बनाय ।
 सज्जन जन ही विनति मम, पढ़ब सुनब मन लाय ॥२॥
 इलोक सोरठा छन्द पुनि, दोहा गीत कवित्त ।
 मति अनुसार उचार करि, नाम नाटिका नृत्य ॥३॥

(पारवतीक जन्म लिख्यते^{३३} ।)

दोहा

दच्छ प्रजापति नृपति भये, जाप दान बड़ कीन्ह ।
 भाग दीन्ह सभ देव के, शिवक भाग नहि दीन्ह ॥१॥
 सती दक्ष^{३४} कुमारि तब, गड़ देखन मख^{३५} दान ।
^{३६}जोमानल तन जारेउ, देखि पतिक अपमान ॥२॥
 शिव-पद प्रीति पुनोत हित, जन्म लीन्ह पुनि आए ।
 विज इच्छा अवतार लिय, हिमगिरि सुता कह ए ॥३॥

२७ - वैशाख । २८ - शक्यतः । २९ - चन्द्र सोम ।

३० - पवित्र । ३१ - पुत्र । ३२ - उत्साह । ३३ - लिखल जाइछ । ३४ - दक्षक
 पुत्री सती । ३५ - यत्न । ३६ - योग सँ उत्पन्न अग्नि मे देह जराय लेल ।

१ - लोप ।

१३ - तीथि ।

गीत माणवरागे--५

हिमगिरि भवन लेल अवतार ।
 हरखित नृपति सहित परिवार ॥
 उषव बछाय गेल नृपधाम ।
 घर घर हरप भरल भरि गाम ॥
 सोभा सुभग^{३७} देखल गिरिराज ।
 विचि^{३८} निरमाय सुता देल आज ॥
 देव-कन्या जनि लेल अवतार ।
 पुलकित^{३९} नित कर मंगल चार^{४०} ॥
 दान देधि कर विप्र^{४१} हुकारि^{४२} ।
 नित प्रमुदित^{४३} चित सुता निहारि ॥
 काण्हाराम भन सुमरि भवानी ।
 पुरिअ मनोरथ मिज जन जानी ॥

छन्द - ६

लीन्ह सति अवतार हेम-गिरिराज भवनहि जाय ओ ।
 तह सिद्धि सम्पति सकल सम्पद रहे नृप गृह छाव ओ ॥
 नित मोद परम आनन्द मङ्गल करत गिरिवरराज ओ ।
 तह आय मुनि सभ रास कीन्हो जहाँ झेल^{४४} समाज ओ ॥
 येन सुमन^{४५} विकसित पवन^{४६} निर्मल तहि^{४७} हरय ययताप ओ ।
 आए खन^{४८} मृग भूय^{४९} गिरि-र करए मोर अलाप ओ ॥

३७ - सुन्दर । ३८ - विवाह निर्माण कय । ३९ - नित्य आनन्दित करैत ।

४० - मङ्गल गायक भाँट । ४१ - ब्राह्मण के । ४२ - आनन्दित मन ।

४३ - पवित्रक समुदाय । ४४ - फूल । ४५ - हवा । ४६ - ताहिठाम तीनू ताप
 (दैविक, दैहिक ओ भौतिक) हरैत अछि । ४७ - पक्षी ओ पशु । ४८ - अधिक ।

२ - हेम ।

३ - हुकार । ४ - छा ओ ।

गिरिराज घर पुर सगर घर घर होय मङ्गलगान ओ ।
कान्हाराम भन^१ समरि मन भल, गिरिजा दिअ वरदान ओ ॥

दोहा

हेमत मनाइन सहित नित, हरखित रहे अवास ।
सुतारूप अपरूप^{५१} लखि, दिन दिन बढ़त हुलास ॥१३॥
साहि समय रिखि नारद, मुनि किन्हो परवेश ।
ब्रह्मभवनसी गमन करि, चले जहाँ अचलेस^{५०} ॥१४॥

नारद प्रवेशक गीत मालवरागे--७

देल परवेश नारद मुनि मुनि ।
प्रगुदित^{५१} हेमत-नगर^{५२} मन गुनि ॥
दण्ड कमण्डल कर, कच^{५३} सेत ।
हरखित^{५३} मुनि नेल राजनिकेत^{५४} ॥
देखितहि नृप मुनि^{५५} लेल सनमानि ।
दिव्य आसन बैसाओल आनि ॥
चरणोदक लेल पैर पखारि ।
मन्दिर सकल सिचाओल^{५६} वारि ॥
नारि सहित नृप कैल प्रणाम ।
ध यभाग मोर मुनि^{५७} एल धाम^{५८} ॥
नृप दुहिता^{५९} तब लेल मजाय ।
मुनि पद बन्दन देल कराय ॥
मुनि ! सरवज^{६०} अगत हितकारि ।
कहिय सता गुन-दोष विचारि ॥

५१ - पुत्रीक अपुर्ण रूप देखि । ५० - पर्वतराज = हिमालयरूप ।
५१ - प्रसन्न । ५२ - हिमालयक नगर । ५३ - केस उज्जर । ५४ - राजभवन ।
५५ - नारदमुनिक सम्मान कयल । ५६ - सिञ्चित कयल । ५७ - घर । ५८ -
पुत्रीके ।

१ - मन मन समरि गिरिजा । २ - सहि । ३ - हरखित । ४ - मुनिक जगाम ।

करण कान्हाराम एह पद भान ।
नारद कहय वचन परमान ॥

(नारद मुनिः^{६०} कथयति मालवरागे)--८

नारद मुनि जान सब नाम ।
से कोन ठाम जहाँ ने पयाम^{६१} ॥
तीनहु लोक हमर संचार ।
केओ नहि देखि मोहि नेवार^{६२} ॥
अतए जाइ मुनिअ जे कान ।
गोए^{६३} ने धरिअ करिअ बखान ॥
से मुनि सबहि मानव रोख ।
सुद्ध स्वभाव हमर कोन दोख ॥
चरचा हमर होअ सब ठाम ।
अचित कहिय होअ ते^{६४} दुरनाम^{६५} ॥
करण कवि कान्हाराम भान ।
सुपथ कहिय कुपद^{६६} कए मान

(पुनः^{६६} नारदः गीतं गायति केशर रागे)--९

अयलहु^{६७} ते^{६८} तुअ धाम राजा, अयलहु^{६९} ते^{७०} सुअ धाम ते ।
सुनल कान गिरिराज^{७१} सुता भेलि, ते^{७२} मन भेल^{७३} अभिराम ।
अलि कुतारध^{७४} भेलहु हेमत^{७५} ०^{७६} रिखि, नारद मुनि मोर नाम ॥

२६ - सर्वज्ञ । ६० - नारद मुनि मालवरागमे कहैत छथि ।

६१ - प्रयाण (यात्रा) करैत छथि । ६२ - निवारण कय सकैछ (रोकि सकैछ) ।

६३ - मुप्त कय । ६४ - दुर्गति । ६५ - अछलाहु बात । ६६ - केर नारद गीत
गवैत छथि । ६७ - हिमालयके पुत्री भेलनि अछि । ६८ - सुन्दर । ६९ - धन्य ।

७० - हिमालय । ७१ - विविध ।

१ - दुरनाम ।

सोभा सुभग सकल छत्रि मोहिनि, जोहल जगत समाम ।
एहिनि सुलच्छनि दोसर न देखिअ, गाथ करण कन्हाराम ॥

छन्द-१०

बिहसि गुह^{७१} मधु वचन मुनि कह, सुनिअ नृपति विचारि यो ।
गुन-खानि^{७२} परम सयानि^{७३} भगवति, आय लेल अवतार यो ॥
नाथ उमा भयानि श्री, सुभग सता तोहर यो ।
सुनि गिरिपति सहित दम्पति, केल मन उद्गार यो ॥
दुख चारि दोख विचारि नारद, केल पुनि अनुसार यो ।
विभु-मातु-हिन^{७४} वर दीनता अति, घर न कुल परिवार यो ।
नगन^{७५} जटिल^{७६} अकाम^{७७} सब खन, अखुन भेल अपार यो ।
एहन नर घर होएत गिरिजहि, उविधि से लिखल कपार यो ॥

दोहा

पुनि लक्षन गिरिराज सुनु, कहौ मै हृदय विचारि ।
अचल हिनक अहिवात जग, परम पित्राक विचारि ॥११॥

हेमत-मनाइनि-बिलापगीतं गायति-११

नारद वचन भूठ नहि रे जिउ सत्य के जानी ।
दम्पति सहित विकल नृप रे गोरी गुन खानी ॥
सुभग सुकोमलि^{७८} दुल्लहि रे बिहि^{७९} सिरिजल आनी ।
तनिका लिखल वर बाउर^{८०} रे विधि मति भूलाणी ॥

७१ - गुह (गम्भीर) । ७२ - गुण सँ भरल । ७३ - चतुरा । ७४ - पिता ओ माता
सँ हीन वर । ७५ - नाइल । ७६ - कामना सँ हीन ।
७७ - पुत्री । ७८ - विवाता आनि कय बनाओल । ७९ - बताह ।

१ - हिन दीनता । २ - जटिल । ३ - विधि लिखल । ४ - हेमत ।

सखि सेज्ज उमा भयन रह रे मैना तहाँ जाई ।
देखि दुल्लहि पुलकित मन रे जल दृग-दो^{८१} छाई ॥
काण्हाराम मन मन दय रे सुनि हेमत-बियारी ।
विभवन्पति उमापति रे सब सोक निवारी ॥

गीतिका छन्द - १२

जत कहल नारद नृपति के तत सुनल गोरी कान हे ।
झूठ होए न वचन मुनिकेर विधि^{८२} तनय सब जान हे ॥
शिव चरण प्रीति पुनील चित धरि मिलन कोन धरान हे ।
एहि सोच सबखन रहहि गिरिजा सज्ज सखी नहि जान हे ॥
धरि^{८३} धीर कहि गिरिराज, सुनि ! सुनु करिअ कोन उपाए हे ।
कहहि नारद सुनिअ हेम^{८४} गिरि लिखल भेटल न जाए हे ॥
जे वरनि वरगुन कहल हम से मिलत गौरिहि आए हे ॥
कहौ एक उपाए करि औ होएब दशर सहाए हे ॥
(पुनः नारदः कथयति । गीतं मालवरागे) १३

जे वर दोख^{८५} सब कहल बखानि ।
से लक्षन देखिअ सुलवानि^{८६} ॥
तपोव्रम तप कर सुता तोहारि ।
मिलिहहि वर सुन्दर त्रिपुरारि^{८७} ॥
साहस सिद्धि होए सबठाम ।
करय उवा तप पुर मयकाम ॥
वर-गुन अनित^{८८} देखिअ जग माँह ।
शिव छाड़ि गोरी दोसर नहि नाह ॥

८० - गुन आँखि से नीर भरल । ८१ - दूर कयल ।
८२ - महाक पुत्र नारद । ८३ - धैर्य धारण कय । ८४ - हिमालय । ८५ - फेर
नारद कहैत छवि । ८६ - धरक दोष । ८७ - महादेव से ।

१ - हेमकर ।

कृपा-सिन्धु वर दानी महेश ।
भवन ललल मुनि कहि उपदेश ॥
करण काङ्हाराम एह पद भान ।
नारद वचन करिअ परमान^{१०} ॥

दोहा

गिरिजहि आनिख दीन्ह मुनि, गुमरि । अकुरक नाम ।
सौवओ^{११} सतप रेजि नृप, कहि ममने निज घाम ॥ १९ ॥

(गीत १३ मनाइनि गायति) १४

^{१२}कस्त एकान्त बनाए, मनाइनि पूछल ।
कहिअ नाथ ! मुनि धात, हम नहि बूझल ।
वर वर कुल परिवार, निक जओ पाविअ ।
गौरी ओग वर होए, विवाह कराविअ ॥
गौरी कुमारि रहति, से वर सहव ।
बूढ़ भिखारि कुमेख^{१३}, से नहि करव ॥
प्राण-विआरि दुलारि उभा पतु जानिअ ।
रोहन करिअ वर जोहि देखि सुख मानिअ ॥
ई कहि हेमत^{१४}-पिआरि, पिआपर^{१५} रहल ।
सहित सिनेह^{१६}-गौरीय, वचन सब कहल ।
सोच विचारि पिआरि, राम सुमर मन ।
से करिहय करमान, काङ्हाराम भन ।

(गीत १४ राजा कथयति केदाररामे) १५

जओ तोहि बैठीक नेह । रानी हे, कहिअ शिखाबद्ध रोह ॥
तप जओ करम भवति । रानी हे, तखन मिलत मूलपानि ॥

१४ - महादेव । १५ - अपरिमित (अत्यधिक) । १६ - विश्वास ।

१७ - संशय = सन्देह । १८ - गीत मनाइनि गायति छति । १९ - पतिके । २० -
अधलाह देव मे ।

१ - शंकर नाम । २ - सौवओ ।

तावन मेवत कलेश । रानी हे, विनु परमान महेश ॥
नारद कहल विचारि । रानी हे, वर गुन^१ निधि विपुरारि ॥
सुनि पति वचन सोहाए । रानी हे, तुरित^{१००} गौरी १ रह जाए ॥
देखि भरल दुग^२ पानि, रानी हे, मोख बैसाओल आनि ॥
छन छन लेअ उर लाए । रानी हे, प्रेम सौ कहल न जाए ॥
करण काङ्हाराम भान । रानी हे, जग जननी सब जान ॥

छन्द १६

सब जानि परम सेवनि^३ गिरिजा, ओलि कोमल बैन^४ यो ।
हम राति सपना देखत जननी, कहिअ से गुनु ऐन यो ॥
विप्रकर घर आय हमरे, कहल तप कछ जाए यो ।
देवरिखि जत कहल प्रथमहि, सतप वचन दूहाए^५ यो ॥
पिता मातुहि भाव मन तप, करी देख ^६ससाए यो ।
एहन सपन^७ निशि देखल, माता, करण काङ्हाराम गाव यो ॥

पुनः पावती गीत गायति-१७

तनवल^८ सुष्टि रचल विधि रे, विष्णु जगदानी ।
तप बल सम्भू^९ संधार^{१०} रह रे, महिधर ११ अहि पानी ॥
तप आधार निव हय जग रे, तप वरह भवानी ।
ऊई कहि विप्र ममन कर रे, सुनल मन जानी ॥

१२ - हिमालयक प्रिया । १३ - पतिके पद । १४ - सर्वतराज । १५ - गीत
राजा कहै छति । १६ - वरत गुनक खजना विवाह पडावेव । १०० -
कोष । १ - गौरीक लग । २ - आनि मे नोर । ३ - चतुरा । ४ - वचन ।

५ - निश्चित रूप । ६ - नाश कप । ७ - राति मे । ८ - तपश्चाक बल सौ ।

९ - संतारक संहार करै छति । १० - पृथ्वीके धारण करै छति सर्व ।
(सेपनाग) ।

१ - निधि हम देखल । २ - सेना । ३ - इ ।

सुनिह सोक बिकल जेलि रे, भय नागरि१२ रानी ।
नगति बोलए कहल सब रे, सपना से बखानी ॥
मातु पिता समुझाओल रे, बहु विधि अनुमानी ॥
करय चललि तप दुल्लहि रे, काहाराव बखानी ॥

छन्द १०

पितु मातु अश्र परिवार परिजन नगर जत नर नारि यो ।
बिकल सोकाकुल सबहि दृषा१३ वरित जलधर वारि यो ॥
देवमुनि पुनि आय सबहि, दुःसाय कहल सवाद यो ।
पारवती तदा संकर भेटिअ भेटिअ६ सबहु विषाद१४ यो ॥

(तपोवन १५ पावैती मच्छति । तस्य गीत गायति मालवराने-१६)

हेनभिरिकूमरि सुमरि महेश१५ । तपोवन चललि तपस्विनि भेत ॥
मणिमय भूषण देल नड़ाए । अश्र विभूति लेल लगाए ॥
घाट १७पटम्बर पहिरन छोड़ि । पहिरि वषट्कर भेलि तैयारि ॥
सुललित जवन जोग जपमाल । कर१८ उर पहिरि लेलि तत्काल
प्रिय परिजन पितु मातु बिसारि । करय चललि तप राजकुमारि ॥
गई तहाँ जहाँ विपिन१२ निकुञ्ज । वेशि करए लागलि १९ तपपुञ्ज ॥
फिरि भाइलि सऊ सखी-सहेलि । करय काटम वस डमा अकेलि ॥
कवहु कवहु फल७ मूल गरास२१ । कवहु८ करय दत्त करि उपवास ॥

१२-बुधियारि ॥

१२-अँखि मेथ जकाँ जल बरसय लागल । १४-दुःख । १५-पावैती तपोवन
जाइत छथि । तकर गीत गवैत छथि नर्तकलोकनि मालवराने मे । १६-
महादेवक स्मरण कय । १७-पटोर रेशमी वस्त्र पहिरन छोड़ि । १८-हाथ
ओ छानी मे । १९-वनक लतागृह मे । २०-छेर तपस्या । २१-भोजन
करयि ।

४-सनुमानी ।

५-सब दृग । - ० । ७ . ० । ८-ब्रह्मरुद्र ।

तन सुख बिसरि तपहि मन लाग । नित९ नूतन शिव-पद अनुराग ॥
करण काहाराव भन मन लाए । बरसन देव शिवसङ्कर आए ॥

दोहा

गई तपोवन गौरि जब, ब्रैठी ध्यान लगाय ।
करन लगी तप जोसदत, हरपद प्रीति दूहाय२२ ॥१७॥

पुनः गीत गायति मालवराने-२०

भूमि२३ भूमि विपिन२४ तोड़ल दलफूल । अनेक कुसुम२५ दल, छोड़ि ओड़ल ॥
बेलि चमेली कुन्द नेवार२६ । तोड़ल श्रीदल२७ ताकि अंगार२८ ॥
धूप दीप नैवेद्य कर तुल । पुजिअ राधाशिव होथि अनुकूल ॥
करिअ कठिन । व्रत गौरि त्रिकाल । बरिअ शाय हर दीन-दयाल ॥
साधन विपुल२९ कएल भवानि । अमित३० वरप नहि जाए बखानि ॥
आय सपन शिव बरसन बेल । तप-सिद्धि गौरि तोहर अब भेल ॥
मन धर धीर अचन सुनु आव । दरसन देव देखि तुअ भाव ॥
काहाराव भन सुनि उपदेश । शिव महेश, जे हरत कलेश ॥

दोहा

३१अश्वत्थजामी समुलि चित, वृद्धे गौरि३ कलेश ॥
बले तपोवन मुदित मन, आरत३२ हरन महेश ॥१७॥

२२-स्थिर कय । २३-भूमि भूमि । २४-वन मे । २५-फूल ओ पात ।
२६-कुन्दक समानाकार फूल नेवारि । २७-बेलपात । २८-...
२९-पति । ३०-असंख्य । ३१-अश्वत्थामी-मनक वात बुझयवला ।
३२-दुःख तुर कथनिहार ।

३-गीत ।

१-कठिन । २-बखान । ३-गौरी ।

श्री महादेवक तपोधन प्रवेश गीतं मालवरीरामे—२१

दीन वन्धुऋणाल महेश । देल परदेश उभा जेहि देस ॥
 सोमिन तिलक भाल^१ तसि रेख । मगन^२ जटील अमंगल भेष ॥
 रूपमाल जवमाल कणाल । भुत-प्रेतगन संग बैताल ॥
 डिमि डिमि डमरु वाज सब काल । पट बिहून^३ फटि^४ केहरि छाल ॥
 असुभ भेष सब लेल बनाय । बलभ बहून बाहु तपोधन जाय ॥
 जटा-जूट-सुरसरि^५ नीर । देवल उभा हरल सब पीर ॥
 पारवती सिव दरसन देल । कहल तोहर अवमग सिद्धि भेल ॥
 कन्हाराम कह धरु बिसवास । धर एण सिव चललाह कैलास ॥

पुनः गीतिका छन्द—२२

आम वर हम होएव तोहर छोड़इ जब तप ध्यान हे ।
 जाह पितु गृह मुक्ति^६ मारिजा देल तरि बरदान हे ॥
 सिवक बानी मुनि भवानी परम हृदय हुलास हे ।
 कन्हाराम भन वर दय संहर गमन कैल कैलास हे ॥

छन्दोऽर्थ ३९ गीतं आसावरीरामे—२३

वर देल तोहि हम आजे । सफल करय पुत्र काजे ॥
 तेजह कठिन^७ तप आये । मोल हरख देखि भाये ॥
 जाह मुक्ति पितु^८ मेहे । अञ्जल तोहर सिनेहे ॥
 उमा सुनि आनन्दे । जनि मिनु कुमुदिनि चन्दे ॥
 मानस बड़ल हुलासे । पुरल सकल मन आसे ॥
 कन्हाराम पद-भासे । सिव कैल गमन कैलासे ॥

३१—कपार पर चन्द्रमाक रेखा (अर्धचन्द्र) । ३४—नगन=नाउट ।

३५—बलविहीन । ३६—छोड़ भे बाचक छाल । ३७—गंगाक जल ।

३८—सौम्य । ३९—छन्दक अर्थसे गीत । ४०—पिताक घर ।

१-छन्दार्थ । २-कठिन । ३-बुसल । ४-अनधे ।

पार्वती गीतं गायति आसावरीरामे—२४

आज-सुफल तप भेला । हरि हरि^१, सिव दरसन मोहि देला ॥
 पुरुष^२ प्रीति रिति जानी । परमन भेल सुलवानी^३ ॥
 मेदल दुमह भलेमे । वर देल आय महेसे ॥
 कन्हाराम पद भाने । मुनिक वचन परमाने ॥

(पार्वती देह साधना कय तपस्या करअि । तस्य गीतं मालवरीरामे-२५)

वरअ हजार कश्य मुल भोजन, साक^४ वरख सत खाए ॥
 किछ^५ दिन ४४^६ बारि पीबि^७ तप कैलन्हि, ए विधि दिवस गमाए ।
 किछ दिन भोजन सब परिहरलन्हि^८, तप कर पीबि ब्रतासे^९ ॥
 एहन कठिन^८ तप देखि उमाके, बानी भेल अकासे^९ ॥
 तप सिद्धि तोहर मनोरथ सकलित, भेल^९ कुतार्थ भवानी ।
 कन्हाराम भन मुनिअ उमा मन, १०^{१०} आव मिलव सुलवानी ॥

दोहा

गगन^{११}-बानि अनुमानि जिअ, सत्य करिअ बिसयाल ।
 पिता बोलाबन आव जब, तप तेजि जाहु अकास^{१२} भाई ॥
 मिनिहैहि आय सपरिजि, तब जानव परतीन^{१३} ।
 सनत गगन^{१४} विधि-वचन जब, पुलकित उमा सुप्रीति ॥२॥

४१—अहो ! ४२—महादेव । ४३—सात सय वर्ष क । ४४—जल ।

४५—छोड़ देलनि । ४६—हवा । ४७—आकाश-बाणी भेल ।

४८—आकाशक बाणी । ४९—घर । ५०—विश्वास । ५१—आकाश
 से ब्रह्माक वचन ।

५—पुण्य । ६—किछ । ७—पीबि । ८—कठिन उमा तप देखि विधाता,
 भेल अकाशक बाणी । ९—मुक्ति । १०—अव ।

(सतीक। गरणोपरान्त श्री महादेव समाधि लगाय रहसि ।

तस्य गीत^१ गायति आसावरी रागे) — २६

सतीक जपन परिनामे^२ । सिव मन^३ भेल विरामे^४ ॥
जपन लागु हरिनामे^५ । सुनहि राम^६ गुण - ग्रामे ॥
रहहि सोव^७ सखधामे । तेज मोह मद कामे ॥
सुनहि ज्ञान^८ मुनि ठामे । सब विधि रहहि श्रामे ॥
रात नाम गुन गाते । सदा^९ भगवत मन ध्याते ॥
करण कन्हाराम भाने । भक्ति-विवत भगवाने ॥

दोहा

बहुत दिवस जब बितित^{१०} भय, एहि प्रकार बहु को^{११} ।
सञ्जु प्रेम प्रसीत बुकि, प्रबदे राम दयाल ॥२१॥

(श्री रामचन्द्रक^१ श्रीसिव १०^२पहुँ आगमन । तस्य गीतं

आसावरीरागे) — २७

सुनुसिव ओ रे, ११कह^३ हरि । पुअ सभ के अग तप^४ करि ॥
बहु विधि ओ रे, सराहल । सिव निज प्रेम निवाहल^५ ॥
पुनि हरि ओ रे, ७कुसाओल । गौरीक जन्म सुनाओल ॥
गुन सब ओ रे, गौरी कर । कहल राम सुनल हर ॥
बितती ओ रे, सुनिअ हर । जाए होइअ गौरीवर ॥
एह वर ओ रे, मागिअ । कन्हाराम कह मानिअ ॥

- १२ - परिनाम (अन्त) । १३ - वैराग्य । १४ - विष्णुक नाम ।
१५ - शमक गुण समूह । १६ - महादेव अतिशय सुख मे ।
१७ - मुनिक स्थान मे । १८ - तल्लीन । १९ - व्यतीत । २० - पार्श्व (लग) ।
२१ - रामचन्द्र कहल । २२ - प्रेमक निवीह कयल ।

- १ - श्री सतीक परणान्त । २ - ० । ३ - सब । ४ - श्रीरामचन्द्र श्रीसिव ।
५ - हरे । ६ - करी । ७ - बूझा ।

दोहा

रामचन्द्र वर दइ सिव, तब आवे कंलास ।
१३सप्तरीखी तेहि समय मह^{१४}, आय मुदित सिव-पास ॥२२॥
कहे महेस रिखेस^{१५} सुनु, तपोवन करहु पयान^{१६} ।
उमा प्रीति परतीति लखि, आय कहहु परमान ॥२३॥

(सप्तरीखि तपोवन प्रवेश गीतं मालव रागे) — २८

बेल परवेस सप्तरीखेस^{१७} । जहाँ रह उमा तपस्विनि भेस ॥
दण्ड कमण्डल कर पुनि वेद । चलल बुझए रिखि गौरीक भेद^{१८} ॥
कह रिखि गौरि^{१९} ! सुनहु मन लाय । केहि कारण बल तप कर आय ॥
काहि मनावहु, की मन तोहि । सखे वचन उमा कहु मोहि ॥
सुनि सुनिवचन उमा तब बाज । कहिनी गूढ़ कहल होअ लाज ॥
नारद आय बेल उपदेस । ते^{२०} तप करि पति होयि महेस ॥
बिहुसि उठे मुनि परम सुजान । नारद वचन सुनय जे कान ॥
ताहि कबहु नहि हो कहयान । करण कन्हाराम एह पद भान ॥

छन्द २६

होहि परम भिखारि सो नर, सुनय नारद बात यो ।
दीन्ह^{२१} सति^{२२} उपदेस, पुनि फिर, भवन छाव ने भात यो ॥
परम कुटिल कठोर कपटी, जगत^{२३} सजय कहाय यो ।
वचन^{२४} ताके मानि गिरिजा, उमत^{२५} वर हित लाय यो ॥

(पुनः ११सप्तर्षिः भवानी प्रति गीतं ७२कथयति) ३०

कुल परिवार न नेह^{२६}, दिगम्बर ७४सबलन हे ।

बिजयधर धर लपटाए, कभेख^{२७} निरलज^{२८} तन हे ।

- २९ - सप्तर्षि । ३० - मध्य । ३१ - हे ऋषीश (ऋषिराज) । ३२ - यात्रा ।
३३ - सप्तपराज । ३४ - गूढ़ अभिप्राय । ३५ - सती के । ३६ - संसार मे
सम्जन कहाव । ३७ - उग्रस । ३८ - फेर सप्तर्षि भवानीक (पार्वतीक)
प्रति गीत कहैत छवि । ३९ - घर मे । ४० - नाइट । ४१ - अक्षछाह
वेश ओ निर्लज्ज देह ।

- ४२ - गौरी । ४३ - सति दीन्ह । ४४ - ताके वचन । ४५ - सप्तरीखि । ४६ - निर्लज्ज ।

सतत मसानहि बास, पास रह भूतगन हे ।
 निरगुन परम भिखारि, न नारि७९ दरद मन हे ॥
 एहन उमत वर लागि, कठिन व्रत कएलह हे ।
 से वर कए सुख कौन, विपति गमयबह हे ॥
 सती विवाह सिब कएल, जगत सब जानल हे ॥^{१३}
 ताहि देल १०अबडेरि, फेरि नहि आनल हे ॥
 सुख सोअत११ नहि, कबहु, भोज रह मंगइत हे ।
 एकसरि रहबहु मोन काज सब करइत हे ॥
 मुनिक बचन सुनि उमा, रहल बिहुसि मन हे ।
 सिब पद प्रेम चित लाव, करण कन्हाराम भन हे ॥

पुनं गीतं गायति—३१

हमर कहल उमा मानह हे, वर देव मैं आनी ।
 सीनि लोक छवि मोहित हे, वर गुन निधि आनी ॥
 सुन्दर सुभग सुलच्छन हे, जेहि वेद१२ जस गाबे ।
 पुर बंकुष्ठ निसीत१३ हे, सुरमुनि सिर नाबे ॥
 दोख रहैत गुनसागर हे, से बड़ तप पाबे ।
 से वर आनि मिलायब हे, देखि मन भाबे ॥
 कन्हाराम भन मन दय हे, सुनल मुनिबानी ।
 नीक देल उपदेश मोहि हे, हंसि बोलल भवानी ॥

पार्वती कथयति गीतं आसावरीरामे—३२

बोली बिहुसि भवानी । मुनि हे, सुनिअ तोहि बड़ जानी ॥
 हेम६९ उपल भए जाए । मुनि हे, १४हठहि न प्रीति ६२दुराए ॥

७९ - नारीक प्रति मत से दर्द नहि छनि । ७७ - उपेक्षा कयल । ७८ - सुतेत छथि । ७९ - जैनिक यज्ञ वेद गनीत अछि । ८० - निषिक्त (स्थित) ।

८१ - सीता वर नाथर भय जाय ।

१३ - (सम चरण मे 'हे' नहि अछि) । १४ - हठ न ।

नारद बचन न रयागे । मुनि हे, सिब पद चित अनुरागे ॥
 अथगुन भरल १५महेसे । मुनि हे, तनि पद प्रीति हमेसे६४ ॥
 विष्णु गुन-निधि घामे । मुनि हे, तनिक न मोहि किछ कामे ॥
 कन्हाराम कवि गाबे । मुनि हे, सिब छाड़ि दोसर न गाबे ॥

गीतिका छन्द—३३

प्रथम मुनिवर आय हम१६ पह, दितहुं जे उपदेश हे ।
 शेर सुनि मन जानि करितहुं, तेहन तपव्रत बेस हे ॥
 सम्भ री हम जन्म हारल, अब न दोसर विचार हे ।
 हठ तेजहु सठता१७ बचन, ता सब कहिय बारम्बार हे ॥
 घटक काज बड़ चटक चाहिय आलस काज नसाए हे ।
 जगत पहुँ१८ कत जे वर कम्पा, करिअ आय मिलाय हे ॥
 कन्हाराम भन मन कयल दिइ व्रत, उमा नारद १९वाक हे ।
 रहब घर कुमारि बर हर२०, विनु ने आनहि ताक हे ॥

दोहा

पगुपरि२१ मुनि कर जोरि कह, सुनिअ मातृ जगदम्ब ।
 पिता भवन अब गमन कर, होइछ बड़े विलम्ब ॥२४॥
 सिब पद प्रीति पुनीत लखि, गौरी मनहि रिखेस२५ ।
 गये हेमाचल पास तब, कहि उमाक कलेस ॥२४॥
 सुनि मुनीस के वचन मृग, गये तपोवन धाय ।
 करि विनती गृह आनेऊ, सुरित२६ उमाके बोलाय ॥२५॥

२१ - प्रेम कितहुं नहि दूर होइछ । २३ - महेसा । २४ - हमेशा (सतत) ।
 २५ - हमरा लग । २६ - कपट । २७ - मध्य । २८ - बचन । २९ - महादेवक
 विना । ३० - वरन । ३१ - महादेवक विना । ३२ - पाएर पड़ि ।
 ३३ - मुनिराज । ३४ - तुल्य ।

(पार्वती^{१३} भवनं गच्छति । तस्य गीतं गायति) ३४

करि विमती गिरिराज, उमा लय आयल हे ।
हरखिल भेलि मनाइनि, नयन जुड़ायल हे ॥
सखि सब मिलि पुनि गौरी, अकम^{१४} लाओल हे ।
हरख समन डर नोर^१, देखि सुख पाओल हे ॥
गुनल नगर नर नारि, सबहि छठि छाओल हे ।
पुलकित परम आनन्द, उमा उर^{१५} लाओल हे ॥
प्रेम-गगन दिन-राति, सखी^२ सम रमयित^{१६} हे ।
करहि कुतूहल^{१७} देखि, विविध विध गमयित^{१८} हे ॥
नृपति कुशाव मनाइनि, अति प्रिय भाषि हे ।
गौरिक करिअ विवाह, देखिय भरि आँखि हे ॥
कन्हाराम भन सुनि^३, नृपति तब भाख हे ।
धर धरज मन लाय, करत अनिलास हे ॥

दोहा

सप्तरिखि सिब ^{१९}पहु गये, उमा प्रीति कहु जाए ।
सुनि सिनेह सिब नभन-^४कर, सुनि निज भवन सिधाए ॥१७॥
(हेमत-रिखि १ -नगरे श्री महादेव-प्रवेशः ।
तस्य गीतं गायति मालवरागे) - १५

आएल सङ्कर विकट घर भेस । देल गिरिराज-नगर परवेश ॥
आल जलक तिलकर राकिस । रूप भयङ्कर उर^५ पर सेस ॥

१३—पार्वती घर जाइत छथि । तकर गीत गवैत अछि । १४—गोद मे ।
१५—छाती । १६—आनन्दमय खेल करत । १७—अद्भुत । १८—वितर्कित ।
१९—शिवक लग । १—हिमालय-राजषिक नगर मे श्रीमहादेवक प्रवेश
होइल । तकर गीत गवैत अछि । २—तिलकक रूप मे चन्द्रमा ।
३—छाती पर शेषनाग ।

१—लोर । २—सखी । ३—सुनि । ४—गमन भी ।

ठाढ़ भेल हर, द्वार गिरीस । डमरु बजाव बाज नहि ईस^६ ॥
बाघम्बर पट लेल अछाए । बैसल मगन मन धुनी^७ लगाए ॥
खरि भेल नप - मन्दि^८ रानि । भिखि लय वहार भेलि कुमरि-भयानी ॥
जाए देखल मुख जोगी अकलेश । उमा चिन्हल, चिन्हल महेस ॥
भिखि न लेश जोगी रहल निहारि । प्रेम भरल मन राजकुमारि ॥
कन्हाराम हर वूझि सिनेह । चट छठि गमन कवल निज नेह^९ ॥

उमा : बिन्हुगीत आसावरीरागे—३६

अल हर दरसन देला । किअये विमुख भय गेला ॥
उमा सोचवस^{१०} भेली । बुझल न संग सहेली ॥
मानस परम अन्देसे । कोन परि मिलब महेस ॥
विरह विकल भयानी । लखत सखी सयानी ॥
घेरज घर गुलुमारी^८ । घर आय त्रिपुरारी ॥
सुनि सखि मृदुवानी । मन पुलकित भयानी ॥
पुरख प्रीति मन^९ आनी । चललि सुमरि ६सुलपानी ॥
करण कन्हाराम जाने । सिब^{१०} पद धरि मग ध्याने ॥

दोहा

पुरख सकल मनकामना सिबसङ्कर वर आय ।
मिब^{११} सयाना^{११} कहल पुनि, भवन गमन हरखाय ॥१८॥

(श्री महादेव ध्यान लगाय रहथि । तस्य दोहा ॥२॥)

हेमत-नगर स गमन करि, सिब कैलासहि आय ।
अचल समाधि साधि रह, बैठे ध्यान लगाम ॥१९॥

४—महादेव वाजने मे डमरु बजवैत जथि । ५—घर । ६—महादेवक
स्मरण कय ।

७—धुनी । ८—मन्दील । ९—सोचवस । १०—लकुमारी । ११—प्रीति आनी ।
१२—सिब । १३—सयाना अस । १४—दोहा गीत गायति ।

गीत-कंदारामे-१७

देवल जिन समसाग ना । करय लगल सप ध्यान ना ॥
सुगरित मन भगवान ना । ज्ञान कथा नहि जान ना ॥
इष्टन काल बिति भेल ना । असुर न प्रगट एक भेल ना ॥

बोझ

ताड़क असुर तेहि समय भाय, तेजमन बलवान ।
बिजय करत सब काम फिर, काहुँ कछु न मुदान ॥

ताड़क असुर प्रवेश गीत भाखव रामे-१८

ताड़क असुर खेल अवतार । भज बल जीवल सकल संसार ॥
तीनि लोक लोक बड़ देल । सुरसम्पत्ति छीनि हरि लेल ॥
मगधन असुर अजर कय देह । हारे सुर भागे छोड़ि गेह १० ॥
दिधि ११ गह गये अमर १२ अमरेम । जाय कहल सब विपति फलेस ॥
ताड़क बैस्य भेल परचण्ड । तासु प्रणय आप नव । खण्ड १३ ॥
करण कन्हाराम भन मन लाय । धरु धीरज विधि करय उपाय ॥

सुर सुरपति सँ विधि कह्य सगहु एक प्रकार ।

सम्भु - तनय पलवदन १४ तै, होय असुर नरिहार ॥३१॥

विधि उक्ति । गीत वैशाखरामे-३२

कह विरजिच १५ सुनिध सुरसे १६ । ईश्वर करय तँ हरत कलेस ॥
पियु नृध आय सती सेबु देखे । हिमनिरि भवन जय लेल तेहे ॥
सवेवन तप कयल राजकुमारी, हर घर लागि सहे बुख भारी ॥

७-चतुरा । ८-देख ।

९-देवताक सम्पत्ति छीनि के हरण कय लेलक । १०-गष्ट नहि भेतिहार ।

११-विधाताक लग । १२-देवता ओ देवराज । १३-पृथ्वीक नवी होय ।

१४-कार्तिकेय । १५-ब्रह्मा । १६-इन्द्र ।

१-काहु । २-सम्पत्ति छीनि ।

हर समाधि बैठे समसामे । ताहि बुभाओय कोन घराने ॥
मनन पास जाइअ सुरसे । हर मन छोह १० करय हीय काजे ॥
करण कन्हाराम भन परमाने । एह उपाय छोड़ि दोहरन आने ॥

बोझ

सुर सुरपति विधि बचन सुनि, गये मदन ११ यह धाय ।
विविध भाँति अरनुति करि, विपति कहो बिलखाय ॥३२॥

छांद - ४०

कहहि सुरपति सुनिध रतिमति १२, करिअ मोर उपकार जो ।
ताड़कासुर बैस सुर बुख करय बड़ परहार २० यो ॥
शाम्भु - सुर २१ तह मरत अरिजन २२, सकर करिअ निभाइ यो ।
जाय हर मन क्षोभ २३ करिअ सब, करय साजुर अवाइ यो ॥

शोरठा

सुर स्तुति किन्हे जाय भेटे मनसिजर २४ आए सब ।
विपति सुरन गुनाय, मदन २५ कहे सोहि कुसल नहि ॥३३॥

मदन २६ कथयति गीत कंदारामे - ४१

करय काज तोहार, सुरपति । परम धरम उपकार ॥
परहित २७ जाय जयो प्रणय, सुरपति । सदनति देहि भगवान ॥
धीरज धरिअ सुरेखा, सुरपति । छोपित करय भइस ॥
करण कन्हाराम भाग, सुरपति । लेल मदन धनु बाण ॥

(मदन धनु - सर लय श्री महादेवक ध्यान तोड़य २ गच्छति,

तरय छेन्ध) - ४२

जब बले श्री रतिनाथ ५ । लय सुगन - सर २६ धनु हाथ ॥

१३-क्षोभ (वेचैतो) । १५-कामदेवक लग झड़ि के । १६-कामदेव ।

२०-प्रहार । २१-शिवक पुत्र सी । २२-बाप । २३-विकलता ।

२४-कामदेव । २५-कामदेव । २६-कामदेव कहैत छथि ।

२७-वोहरक कल्याणक हेतु । २८-कामदेव । २९-कुलक बाण ओ धनुष ।

१-सुरेखा, छोपित । २-करय । ३-तोपर धार ।

करि हृदय माह विचार । तब किन्ह बत सँसार ॥
 मनसिज भयो^४ कोपमान । तब रहा कछु न ठेकान ॥
 ब्रह्मचारि जनकार । ताहु उर से^५ मार ॥
 करत जप तप जोग । सेउ भुलि भेल रस भोग ॥
 काहु न धीरज धरम । भयो ज्ञान तेजि बेमरम^७ ॥
 नहि रहा काहु विवेक । सब छोड़े धर्मक टेक ॥
 वरनि^८ धीर तर नारि । भयो काम वस विचालि^८ ॥
 ११ सँल सँलहि धाय । भयो अचल^९ रस भाव ॥
 उमरि सुरसरि^{१०} नीर । तब मिले सागर तीर ॥
 ३० उर^{१०} सबहि मदन बिराज । सब छोड़े धीरज लाज ॥
 नयी नाल ताल व । करत राग सधाव ॥
 तब लता सखा निहारि । ओइ लेन चहु^{११} अकवारि ॥
 जहाँ जइनि^{१२} की गति ऐस । ११ तहाँ चैतन्य^{१३} जन^{१२} कैस ॥
 पशु पक्षी जीव^{१३} जन्तु । लागू कामक तन्तु ॥
 सुर असुर किन्दर^{१४} ब्याल । अओ भूत प्रेत बेताल ॥
 इन्ह धरि कथा कल^{१५} बयान । हय^{१६} सदा मदन गुलाम ॥
 भयो लोक मदनक अन्ध । सब छोड़े धर के धन्ध ॥
 कहत कवि कन्हाराम । सब बेमत भयो वस काम ॥

१४ छन्दोऽर्थे गीत आसावरो रागे-४३

सबक विवेक दुरि भेले । काम-विषय सब भेले ॥
 जोगी जती तप ध्याने । छाड़ि भुलल रसधाने ।

३० - पृथ्वी पर घेरीवान् । ३१ - पर्वत पर्वते दिस दीड़त अछि । ३२ - संगीक जल । ३३ - सधक हृदय मे ३४ - आलिङ्गन । ३५ - अचेतन वस्तु । ३६ - चल-निहार जीव । ३७ - किन्दर (देवविशेष) ओ साप । ३८ - स स्त्रीकरण । ३९ - अछि (है) ।

४ - भयो कोउ बोव ५ - सेर । ६ - सी । ७ - बेमर्म । ८ - विरवापि । ९ - अवल मन रस । १० - उद । ११ - ० । १२ - जन्म । १३ - जीवा जनि सब लागू । १४ - भू-देव ।

तेजल सब सङ्ग्रह^{४०} । बिसरल सुकृत^{४१} पन्थे ॥
 वेद विधान बिसारि । प्रेम मगन नर नारि ॥
 धनु सर जव लेल मारि^{४२} । धीरज बग सँ बिसारे ॥
 मयल कवल विपरीति । काहु रहल नहि^{४३} सीति^{४३} ॥
 निज निज तेज ४४ मरजादे । सबय काम-रस स्वादे ॥
 करम कन्हाराम गाथे । पुनि जनि हो अस भादे ॥

सोरठा

परम बिजल बसि काच, सुर मन्धवं सिद्ध नर ।
 बिसरि रहे हरिनाम, मनसिज^{४५} मन सब के हरे ॥३५॥

दोहा

बुढ़^{१६} वण्ड^{४६} ब्रह्म^{४७} मह, लीला अस कर मार^{४७} ।
 नारि नारि अस पुष्य कर, नारी^{१७} पुष्य हकार ॥३५॥

छन्द-४४

बुई परम प्रणव मनसिज, कीन्ह कीतुक^{४८} छोल यो ।
 जायत हर^{४८} पह जाय गतिज, तावत उठल कलोल यो ॥
 तिवहि देखि सकस्य १८ मनसिज, उरय बलि बित डोल यो ।
 पूर्वावत संसार बिलि गति, भेल परम अमोल यो ॥

सोरठा

बुखित जये सब जीव, मदन^{४९}-१० तरावित बाल जिमि ।
 डरे काम देखि सीव^{२०}, मनसिज मनहि विचार करि ॥३६॥

४० - उत्तम पुस्तक । ४१ - धर्मक वाट । ४२ - कामदेव । ४३ - धर्म ।
 ४४ - मर्यादा छोड़ल । ४५ - कामदेव समक मतके हरननि । ४६ - ब्रह्माण्ड
 भरि मे दू टा लाओ चलओ गति । ४७ - कामदेव एहि प्रकारक लीला
 कयल । ४८ - विस्मय प्रस्तुत कयल । ४९ - शिवक लग ।
 ५० - कामदेव सँ तेना डरावत नेता कयना कछरो सँ डराइत अछि ।

१५ - श्रीती । १६ - बुढ़ । १७ - पुष्य भासी । १८ - मन नरसिज । १९ - तरेत ।
 २० - शिव ।

फिरत होत अति लाज, करखो कोत परकार विधि ।
अकट कीन्ह रिसुराज^{२१}, कुसुमित भयो वन सुखन पर ॥३०॥

वसन्तरागे — ४५

रितु समय प्रकट वसन्त सुन्दर, देखि वन मन मोहहरी ।
बापी^{२२} लड़ाग सरोज विगसित, सुखद सर^{२३} राव सोहरी ॥
तहाँ गुञ्ज मङ्गुल गत मधुकर, हंस सुक^{२४} गिक धुनि करी ।
कत नाथ राखहि अश्वरागन, गगन गन आनन्द भरी ॥
बह पवन^{२५} गान्ध सुगन्ध सीतल, मदन ज्वाला बहि चली ।
सब^{२६} मन मनसिज^{२७} जाने, सुगमता तन अति भली ॥
करि कोटि कला उपान मनसिज, हारे सोन^{२८} २२ महाजिजा^{२९} ।
अचल सम्भु समाधि छूट^{३०} न, करण कन्हाराम गाजिजा^{३१} ॥

दोहा

चितवन^{३२} चहु दिग निरखि कय, देखे विटप^{३३} विशाल ।
कोपि^{३४} चहु तेहि दरख पर, किये नयन दुहु लाल ॥३१॥

छन्द — ४६

कैए कत परहार मनसिज छूट न सम्भु समाधि यो ।
दरख पर चढ़ि कैए जे भारए, सिबहि^{३५} उर सर साधि यो ।
जटे जागि समाधि जूटे, जूटे मदन धाकि^{३६} यो ।
चहु ओर नयन उधारि देखे दरख पर अपराधि यो ॥

४१—वसन्त । ४२—बावली ओ पीछरि मे कमल कुलायल । ४३—पीछरि ।
४४—सुगन्ध । ४५—हवा । ४६—कामदेव । ४७—सीत ओ महायक ।
४८—विशाल गाल पर । ४९—कोष कथ । ५०—सिबक छाती पर सर साधि
के । ५१—ज्वाला ।

21 - मुए । 22 - महाजिजा । 23 - छुटल । 24 - गाजिजा । 25 - चितवन ।

दोहा

शिवर नयन उधारिउ, कोपे अनल^{३७} घहाय ।
चितवन^{३८} नयन तकाय कय^{३९}, काम भये जर छाव ॥३२॥
हाहाकार जगत भए^{४०}, भोगी राव पछतय ।
हरखि^{४१} जोमि जति तप रम, भये अकण्ठ आव ॥३३॥
रती सुने^{४२} पति-मरन सुनि, अपाकुलि पहु^{४३} चलि^{४४} धाय ।
रोधति^{४५} वरति करणा करति, हरपद लोटति आय ॥३४॥

रति-बिलाप केदाररागे—४७

किअ पहु हरल हमार है हर, किअ पहु हरल हमार ।
कोत अपराध पहु^{४६}, कयल तोहर बहु, जाहि कयलहु पहु छार ॥
तोहे विभजन पति, जाभि नारि गति, धिनु पहु जीवन असार ।
घोर वयग धनि, हरल सिन्दुर मनि, पहु विनु जगत अधार ॥
छन छन महिपर^{४७}, अखन नीर डर, करणा करय अपार ।
रति विकल तह, सङ्कर सुनि कह, होयत तोहर परकार ॥
अरज धय रह, मिलत तोहि पहु, यदुगुल कृष्ण अवतार ।
तास समय रति, होयत तोहर पति, छुटत विरह दुख भार ॥
नाम अगज अङ्ग नहि तब लगि, विनु तन^{४८} जीवन संसार ।
कन्हाराम भन, रति मगन मन, चलि भेल अपन अमार^{४९} ॥

(सुरपति श्री महादेव^{५०} सह गच्छति । सौंड़ सालवराने — ४८)

हरक समाधि तोड़ल जब मनसिज, सुरपति^{५१} सुनल काने ।
सहित विरञ्जि^{५२} देव सुरपति मिलि, हरि सह कयल पयानि^{५३} ॥

५२—आमि प्रवृत्ति भेल । ५३—कनैत वजेत ।
५४—पृथ्वी पर । ५५—बिना देहक जीवन । ५६—हर ।
५७—धीमशीदेवक लग । ५८—छन्द । ५९—ब्रह्मा । ६०—प्रस्थान ।

१ - चितवन । २ - कय तो काम । ३ - भो । ४ - जोसी पत्नी हरखि । ५ - सुने ।
६ - पहुचि । ७ - पहु हम कयल । ८ - नहि नयन ।

विष्णु विरञ्चि अमर^{७१} अमराधिप^{७२}, सब भेल सिवक समाज^{७३} ।

अक्षतरङ्गादि स्वामि सब जानिअ, की कहव हम सब भाखी ।
तदीन बितति करि कहिअ कुबानिधि, जजो मोर अभिमत राखी ॥
सुर गन्धर्व सर्व मन इच्छा, देखिय हरक उछाहे^{७४} ।
कान्हाराम धन पुरिअ मनोरथ, करिअ सदासिव व्याहे ॥

छन्दः । देवोक्ति गायति-४६

दीनकंधु कुमाल सङ्कर, अरज^{७५} सुनु मन लाय यो ।
देवकी दुख देत दानव, तकर करिअ उपाय यो ॥
ताइकासुर प्रबल बल भेल, दर्प चढ़ रण धाय यो ।
समर कए सब अमर आरे^{७६}, उरे सकल गढ़ाय यो ॥
सती जाय वे जन्म लीन्हो, हेतुगुता^{७७} कहाय यो ।
कठिन तपश्चत किन्हू तपोधन, सम्भू-पति हित लाय यो ॥
तासु पाणिग्रहण कीजै, होइअ देव-सहाय यो ।
तासु सत अवतार छटमुख^{७८}, हुनव दानव जाय यो ॥
दीन के दुख हरण सङ्कर, सरन सब छैक आय यो ।
सरन के प्रभु राखु लज्जा, करण कान्हाराम गाय यो ॥

दोहा

पार्वती तप कीन्ह बड़, गुण पद प्रीति विचारि ।
अङ्गीकार करि तासु बत, दीनकंधु त्रिपुरारि ॥४२॥
कहे महादेव सुनिअ प्रभु, सहित विरञ्चि^{७९} सुरेस ।
आजा सब के करव हम घटक पठाबिअ वेस ॥४३॥

७१ - देवता ओ देवराज । ७२ - अश्वत्थामा (मनक बात बुझयवला) । ७३ - ब्रह्मा । ७४ - निवेदन । ७५ - देवता के बेलओलक । ७६ - हिमालयक पुत्री ।
७७ - घणमुख (कासिक) । ७८ - ब्रह्मा ओ इन्द्र ।

हरखे धूर बरखे सुमन^{८०}, भगन दुन्दुभी बाज ।
सप्तरीखि तेहि समय मह^{८१}, आयै सिवक समाज ॥४४॥

सप्तरीखि-प्रवेश गीतं आसावरीरामे - ५०

सप्तरीखि अछ अवसर जानि । अगलाह अहाँ विधि हरि सुखपानि ॥
कह विधि बचन सुनिअ रिसेस^{८२} । हेमगिरि भवन करि परधेस ॥
हेमगिरि भवन गौरी कुमारि । कथा व रिअ दिहु^{८३} वर त्रिपुरारि ॥
घटक चटक परिपञ्च^{८४} निधान । ताहि सिखाव दोरार के आन ॥
जाय कथा मुनि जानु गिलाय । लभ पत्रिका लेख लिहाय ॥
करण कान्हाराम पढ़ पदनाम । हरखित रिखि तब कएल पयाग ॥

दोहा

प्रथमहि मुनिवर गयेल तहाँ, जहाँ गिरिराज कुमारि ।
बोले मधुरस बचन तब, हरखित हृदय विचारि ॥४५॥

गीतं आसावरीरामे - ५१

भेल परम विमवादे^{८५} । कहव अवलहुं समाधे ॥
सुनु गिरिराजकुमारि । काम^{८६} जारल त्रिपुरारि ॥
सुनल न हमर कहानी । मानल नारद-बानी ॥
तप भेल व्यर्थ तोहारै । आवै की करव परकारे ॥
बोली बिहुसित बानी । उचित कहल मुनि जानी ॥
जारल काम महेसे । तकर न मोहि अन्देसे ॥
कहओ बचन परमाने । भिव छाड़ि नति नहि आने ॥
करण कान्हाराम गावे । सुनि मुनि अति सुख पावे ॥

८२ - कुल । ८३ - भे । ८४ - मुनिराज । ८५ - स्थिर । ८६ - छल करवा से
पढ़ । ८७ - सुख । ८८ - कामदेव के जराओल । ८९ - कथन ।

मोहटा

देवे^१ हरे-वद प्रीति, उभा प्रेम^२-लव-लीन^३ मन ।
मुनिवर बुझि मन धीति^४, करि प्रणाम मये हेणत^५ यह ग^६४६॥

दोहा

मये द्वैपाचल निशठ मुनि, नृपति कोन्ह सनमान ।
अरव^{१०} गदारथ कइय कइ, पुलिह^३ कहीं पमान^५ ॥२७॥

(सप्तारिखि कथयति गीत गौड़ मालकराने) - ५२

बसलहु^१ हम तुअ पास नृपति सनु घटवा एक विचारि ।
तीरि कुमारि नृपति घर सुन्दरि^४, सुन्दर घर विपुरारि ॥
परम जोम^२ सुन्दर घर सज्ज^३, निवसत नहि संसार ।
अनुमत करिअ समाज सृजन लय, अओर^५ अपन परिवार ॥
प्रथम^६ रानि सनमानि विचारअ, तवन सज्ज समार ।
बरगुन एहन कतहु नहि भेटव, महादेव^७ घर राज ॥
तीनु^८ लोकक सोक^९ नैधारवि, सूर मुनिमन सब दास ।
घटक-वचन सुनि १० कवि उठि गेलाह जहाँ निज रनिवान ॥
कुल बलिवार सृजन परिजन अत, सबहि हँकारि बोलाव ।
घटक-वचन पुनि सबहि सुनाओल, अनुमति काहिय दिदाव ॥
रानि सहित अनुमत सम्मति भेल सबक मिलल एक भाव ।
हरखि जमाय करिअ निवसज्ज^{११}, करण कन्हाराम गाव ॥ ॥

८७ - पार्वती प्रेमक कोइ माया मे एकाग्र । ८८ - धर्म । ८९ - हिमालयक लग ।
९० - अर्थक हेतु जल । ९१ - आनन्द । ९२ - योग्य । ९३ - पहिने रानीके
सन्मान कय विचार सक ।

९४ - लोकक निवारण करिअ ॥ ९५ - हिमालय ।

१ - श्रेयो, २ - लीलीन । ३ - पुलिह । ४ - ० । ५ - अओ । ६ - निज

छन्द--५३

पुल्ल^७ मुनिवर पास^८ गिरिबर, कहल विधिक सकोरयो ।
उभा-वर^९ हर करिअ समुचित, तकर करिअ विशारयो ॥
सुनि गिरिबर कोन्ह अनुमत, सुदिन लगन लिखावयो ।
देख मुनिकर लगनपाती, चलल हरखित लावयो ॥

दोहा

लग पाती तब सप्तरिखि, सुदित चले हरनाथ ।
पाती कोन्ह बिचित्रि^{१०} कर, आनन्द मन अविकाय ॥२८॥

लगनपवित्रा-गीत गावति - ५४

लगनपाती रिखि आनल, सब जग^८ जानल हे ।
ब्रह्मा बौचि सुनाव, हरख सव गानल हे^९ ॥
देख सुभाव लगन विधि^{१०}, सब भेल सिद्धी^{११} हे ।
कुन मुनि परम अनन्द, पाओल निदव नीधी हे ॥
मन दुन्दुभी बाजए, सब जन^{१२} गाजए हे ।
हरक विवाह उछाह, साज सब साजए हे ॥
सुर^{१३} सुमन वरमाओल, सिवाहि बड़ाओल हे ।
घर घर उधव वधाव, कन्हाराम गाअल हे ॥

दोहा

लगन रिदाए^{१४} लाए मुनि, सुनि सूर मुनि गन्धर्व ।
कसन साज तटिपान के, सुरगण हरनाथ^{१५} सर्व ॥२९॥

१६ - लगनपर्वत के । १७ - ब्रह्माका हाथ से । १८ - देवता कुल बरसओलनि ।
१९ - स्थिर कथ । १०० - महादेवक मन ।

७ - पुल्ल । ८ - ० । ९ - ० । १० - विधी ।

११ - सीद्धी । १२ - जन नय । १३ - ० ।

(गिरिराज स्वयंम्बर आरम्भ करथि । तरस गीतें वायति)--५६

कथा भेल मनमोल, बुढ़ दिस मानल हे ।
गुदिन सुधड़ी तकाय, स्वयंम्बर ठानल हे ॥
हेभत भवन भरि नगर मोय मुदित मन हे ।
गौरी बिवाह उछाह देखब दूग फखन हे ॥
मेना नगर हकारि नारि सब आवए हे ॥
कोकिल^१ वेन उधारि मङ्गल गीत गावए हे ॥
कीमुक देखि मनाइनि अवसर पाओल हे ।
दिश्य - भूषण पट^२ चौर सवहि पहिराओल हे ॥
सबहक चित उद्वेग लागि रहल अति हे ।
कखन उमा सिर सिन्दूर मनाइनि देखति हे ॥
घर घेरज मन लाए कन्हाराम कवि मन हे ।
परसल होएब महेश पुरत अधिमत्त मन हे ॥

पुनः गीतें वायति - ५६

हाट चाट जत पुर महै रे सब गली बजारै ।
रकनकहि सवहि दम्भाओल रे, जगमग भल कारै ॥
कनक भवन भरि^३ पुर भेल रे, नृप देख बनवाए ।
पैघ छोट लखि पड़ नहि रे, धनपति समुदाए ॥
नृप मन्दिर मणिमय रचि रे, सोना अधिकारै ॥
अमर^४ नगर देखि भक्ति^५ रह रे, सुरपति लखवाए ॥
जन्मसा नृप प्रथमहि रे, रचि ललित धितानै^६ ।
चित्र बिचित्र उरेहुल^७ रे, कए तरह सकानै ॥
व्याह वस्तु जगमह जत रे, तत भरल भडारै ।
कत सरजाम कमल नृप रे, नहि रहल सुमारै ।

१ - कोइलीक संगल बाणी । २ - रेशमी वस्त्र । ३ - सोनाक ।

४ - नगर भरि । ५ - देवता लोकनि नगर के देखि । ६ - पलटाइत
रखि । ७ - जन्मसा । ८ - परिष्कृत कमल ।

कन्हाराम भन भवति रे, केहि गृह अवतारे ।

बहौ कगी कोन बातक रे, नृप सबय समारे ॥

(अथ श्री महादेवक सिंगार, बरिआतक तैयारि । तरस गीतें

वायति । गीतिका छन्द) -- ५७

सवहि कर सिंगार मन^१ सब, जटा गौरि^२ बनाय हे ।
भौर वेडल विविध भिखधर, फटा देल लटकाय हे ॥
साल^३ अओ लण्डमाला^४, परिहरि^५, बाष छाल ओझाय हे ।
कान कुण्डल रुडमाला^६, कर कपाल गधाय हे ॥
गुनि रुडमाल गधाय पहिरल, माल कण्ठ लेखाय हे ।
गङ्गा भोजन गङ्गा सिर^७ बह, अङ्ग खाक^८ लगाय हे ॥
गरा सोय^९ उवधीत सुन्दर, बागुनी लपटाय हे ।
चन्द्र भाल विसाल लोचन, एक अनल^{१०} घहाय हे ॥
भूत प्रेत पिसाच परिजन, नाच जोगनि घाय हे ।
करत गन गन मनहि मन गन विकट भेग बनाय हे ॥
चलल हर वर वरद पर चढ़ि डमरु लेल बजाय हे ।
जुत्थ^{११} पुत्थ बरात भूत गन, चलल अति हरजाय हे ॥
अमृष लेख देखि सिब केर, सुर^{१२} चिया मुसुकाय हे ।
हुलह लणक^{१३} हुलहहि जग नहि, कोन करब जगाय हे ॥
उगत वर बरिआत उमत, समत केशी नहि जाय हे ।
कीन विधि समुरारि निबहव, सँग बाग न जाय हे ॥

१ - सजाओल । २ - महादेवक गन गन । ३ - मुकुट । ४ - चादरि ।

५ - छोड़ि । ६ - रुडमाला । ७ - लण्डमाला । ८ - अनेक ।

९ - आगि घबकाय अलि । १० - देवकी । ११ - योग ।

१२ - रुडमाल । १३ - भिख । १४ - जुत्थ ।

करण कवि कन्हाराम कह पुनि, सुनिअ मव मन आए हे ।
२० जगतपति नैयतिन^{२१} सङ्कर, करव अपन उगए हे ॥

(देवतागन बरात मच्छति, तस्य गीतम)--५८

विष्णु थिरजिब^{२२} सुरपति, सुर मुनि किन्दर^{२३} हे ।
साजि समाज बनाय, चलल बरात^{२४} हर हे ॥
विष्णु^{२५} सयन जगमगित, देखि भेटल सोफ हे ।
हर दुलह^{२६} अनुरूप, हसत पथ लोक हे ॥
विष्णु कहल विधि, सुनिअ सहित सुरराज हे ।
फरक फरक भए चलहु सैन^{२७} समाज हे ॥
हरिक वचन सुनि गङ्गार मन मुसकाय हे ।
फेरल हरमन^{२८} सकल, श्रृङ्गी बजाय हे ॥
हरआज्ञा मन जानि, फेरल मन आए हे ।
प्रभुपद कएल प्रणाम, विकट रूप आए हे ॥
कन्हाराम भन हरमन, देखि सकल हे ।
हसल सकल हहाए, देव^{२९} सुरभूष हे ॥

गीतिका छन्द--५९

भेल अमित अनेक बाहुन करत नाना रंग हे ।
देखि सयन^{३०} समाज सङ्कर, विह्वसि कए लेल रांग हे ॥
काहु तयन^{३१} न श्रवत नासा, कर तमासा घाए हे ।
काहु बाहु विहून देखिअ, काहु बाहु घनेर^{३२} हे ॥

२०—संसारक ईश । २१—संन्यासीक नाथ । २२—ब्रह्मा । २३—किन्दर
(देवगण विशेष) । २४—महादेवक वरिषासी । २५—देवतागन के ।
२६—सेना । २७—महादेवक गण । २८—देवता ओ देवराज ।
२९—सैन्य (अन दल) । ३०—ककरो आँखिये नहि न ककरहु कान नाक नहि ।
३१—विहीन । ३२—बहुतो ।

४ - पतिमात्र ।

३३ रिष्ट पुष्ट अनिष्ट धार, रङ्ग रूप कराल हे ।
३४ छीन तन कोपीन काहु न, मुखन कर कपाल हे ॥
अमुर^{३५} बवान शृंगाल खर मुख, भरे सोनित गात हे ।
आसमई जे गई करते चले सम्भु बरात हे ॥
कन्हाराम भन मन-भेष अगनित, कौन धरन इदमपति हे ।
चले जात बरात भुतगत, करन अद्भुत भाँति ॥

(मगपुर^{३६} लोक वर वरिआत देखि गीत गायति) : - ६०

वरद चहुल हर चलल विआहुय, भूत प्रेत बरात ने माई ।
छिमि छिमि डमरु बजाव वृषभ^{३७} पर, आक धुधुर खात ने माई ॥
गरा^{३८} गरल, उर^{३९} फनिवाँत लहलह, विभूति भरल भरि गात^{४०} ने माई ।
पाट^{४१} पटम्बर अम्बर तन नहि बाधछाल कहरात ने माई ॥
दिग^{४२} परिधान लाज^{४३} नहि तन^{४४} मह छन छन घेरए घेआन ने माई ।
मगपुर^{४५} लोक देखि वर वाउर^{४६}, काहुन रहल गेआन ने माई ॥
वर वउराह^{४७} भेष विकट अति, देखो लंगो घाय ने माई ।
एहन उमत वर कोन विआहुय, देखितहि लोक डेराय ने माई ॥
धन्य हिया^{४८} तेहि माय थाप के, जे करए एहन जमाय ने माई ।
एहन उमत दुलह^{४९} रांग दुलहीन, निवहव कोन उगए ने माई ॥
कन्हाराम भन मुमरि सिव मन, मुनहु सकल नर नारि ने माई ।
धन्य भाग अहिनात^{५०} अवल तेहि, जेहि वर मिलु त्रिपुरारि ने माई ॥

३३ - हूट (गोटावल) । ३४ - क्षीण शरीर ।

३५ - दैत्य कुकुर गिदह गवडा सनक मुहधला । ३६ - संघ

३७ - मार्ग मे नगरक लोग । ३८ - वृषभ (बसहा) । ३९ - कण्ठ मे विष । ४० - छाती पर साप । ४१ - देह । ४२ - रेशमोवरनक पहिरन । ४३ - दिशा रूपी पहिरन (नाउट) । ४४ - देह मे । ४५ - मार्ग मे नगरक लोक । ४६ - बटाह । ४७ - बटाह । ४८ - साहस । ४९ - लोभाय ।

१ - क्षीण । २ - आज ।

पुनः दोसर ग्रामलोक उत्ति, गीतं गायति--६१

उमत् उमत्^{१०} वर, चलल विधाह कर हे ।
आगे माइ उमत्^{११} सज्ज वरिआत, एहन वर के कर हे ॥
नगन^{१२} सतत रह, लाज न तन मह हे ।
आगे माइ, भसम भ ल भरि गातु^{१३}, एहन वर के कर हे ॥
बुढ़ सभूर वर, लाय धुधूर कर हे ।
आगे माइ धर धर कपडत देह, एहन वर के कर हे ॥
डगमगात चल, नयन अतल^{१४} वर हे ।
आगे माइ, भूत प्रेत सिनेह, एहन वर के कर हे ॥
विशूल खटङ्ग^{१५} घर, अमुभ भोज वर हे ।
आगे माइ, देखइत परम भयान, एहन वर के कर हे ॥
धिकाह सुन्दर वर, कयल^{१६} गुरूप हर हे ॥
आगे माइ, कन्हाराम कवि भान, एहन वर के कर हे ॥

(राजा गिरिराजक सरिआती नेओता आब । तस्य गीतं
गायति सालव रागे) --६२

गिरि^{१७} लघू पैध सकल नृप^{१८} नेओतल, नदी नाला ताळावे^{१९} ।
वन सागर सभ नेओत पठाओल, मुदित^{२०} मनोहर भावे ॥
कामरूपी सुन्दर तनु^{२१} धरि धरि, चलल नेओत सब झारी ।
सज्ज समाज सहित वर नागरि, आगरि पिअहि पिआरी ॥

१०—उमनाथ (महादेव) । ११—उमत्त वरियाणी संग मे । १२—नाछट ।
१३—देह मे । १४—आगि । १५—विशूल रूप मे सोटा । १६—महादेव कुरूप
बनल छथि । १७—पैध ओ छोट सभ पर्वत के । १८—राजा हिमालय ।
१९—आनन्दित । २०—देह ।

१ - गिरिराज । २ - तलावे ।

परम सिनेह मंगल पुनि करइत, पट्ट^{२२}चल नृपति अवासे ।
आदर भाव सकल ३समानल^{२३} देल सुखद सुखवासे ॥
नगर सगर^{२४} छवि देखि मोहित छवि^{२५}, विधिकृत अति लघू लागे ।
बाग तड़ाग कुप सरिता वन, सुभग समारल^{२६} आगे ॥
कञ्चन^{२७} कलस विलस वर घर घर, सोभा बरनि न जाए ।
नारी पुरुष चतुर छवि सुललित, सुर मुनि मन ललचाए ॥
जगदम्बा जेहि नगर जनम लेल, से पुर अति अभिरामे ।
सुख सम्पति संप्रदा मज्जल नित, भनत करण कन्हारामे ॥

गीत कुमरमक -- ६३

सरोवर^{२८} तट सब, ओ रे चलि भेली । कुमरमक उपाय करय गेली ॥
गीति नृप^{२९} कत, ओ रे करइत । विविध वाजन सब बजइत ॥
कौतुक कर सब ओ रे कत रङ्ग । नारि वृन्द आनन्द सज्ज ॥
कुमरम गौरी केर^{३०}, ओ रे जजन भेल । चिड़ड़ा^{३१} बिलहि खुइछा बेल ॥
गौरी सहित चलु, ओ रे मनाइनि । भवन गमनसज्ज साइनि ॥
कन्हाराम भन ओ रे सुमरिहर । परिछि उमा लय गेलि घर ॥

गीत लावा भुजाउनि--६४

लावा भुजप बैसलि बहिनिकाँ, वीधि^{३२} निपुनिकाँ हे ।
आहे, बहिनीप^{३३} मोरि^{३४} चक्राय बैगलाह, चलहा बहिनिकाँ हे ॥
लावा भुजय बहिनिकाँ, थोरे धनिकाँ हे ।
आहे, ल बा भुजि कएल तैदार, को अचरे शपनिकाँ हे ॥

३१ - सम्मानित कयल । ३२ - सुन्दरता । ३३ - बधाताक रचल सौन्दर्य
अत्यन्त तुच्छ लगल । ३४ - सजाओल । ३५ - सोनाक घट ।
३६ - गोलारिक कछेर । ३७ - विधि करवा मे निपुण । ३८ - मुकुट ।

३ - सन् । ४ - नारि । ५ - निज । ६ - कर । ७ - चिड़ड़ा बिलहि खुइछा बेल ।
८ - मोरि ।

सुनहु भैया कहनिआँ^१, मांगु बहिनियाँ हे ।
आहे, की देव मोहि इनाम, कि लवान^२ भूजउनियाँ हे ॥
कन्हाराम एह भनियाँ, सुनु बहिनियाँ हे ।
आहे, सबस थीक तोहार, कि जे मन मानियाँ हे ॥

गीत बिलौकीक--६५

शुभ शुभ कै बहरएलिह, आगे माइ, गधइत मङ्गल चार ।
कुल परिवार अपन जत, आगे माइ, गौरि लागलि सेहि द्वार ॥
बिलौकी मांगु हे ॥
दुखि धान दए चुमावि हे, आगे माइ, गुन युग समा अहिवात ।
हिरमनि रत्न जतन कए, आगे माइ, देल मनाइनि हाथ ॥ बिलौकी ॥
केओ देल ओंठी पुनरिआ हे, आगे माइ, केओ देल मोतिक हार ।
केओ देल टकवा मोहर हे, आगे माइ, जकरा जे परकार ॥ बिलौकी ॥
सगन नगर धर फिरि फिरि हे, आगे माइ, हरषित भेल अवास ।
परिछि सबहु पर गेलिहि आगे माइ, कन्हाराम कवि पाब ॥ बिलौकी ॥

दोहा--५०

नगरसमीप बरात जब आए, कीधि कहल ई बात ।
विप्र हजाम पठाविअ खबरि देव बरिआत ॥

ब्राह्मण हजाम आगमन गीत--६६

आएल ब्राह्मण सहित हजाम । कहए समाद बैसल नृपधाम ॥
नगर निकट आएल बरिआत । आविअ परिछि जात सरिआत ॥
ब्राह्मण नापित पए धोआए । विविध प्रकारक भोजन कराए ॥
परिछए चलल वाजन सभ बाज । बरिआतिक सभ साज समाज ॥

६६ - निवेदन । ७० - लवाभूजाओन (लवा भूजक इनाम) ।

१ - प्रकाशित पोथी एतहि समाप्त अछि ।

नगर लोक सभ अति हरषाए । मातृका पूजा करए नृप जाए ॥
करण कन्हाराम एह पद भान । ब्राह्मण नापित गेल लए पान ॥

गीत मातृकापूजा--६७

निल कुश लेल हेमकर, मातृका पूजा विधि कर हे ।
अँकुरी अच्छत नैवेद, सोडह ठाम धर ॥
गोमय दूबि अनाओल, रछिका बनाओल ॥
सोडह रछिका के बरत, दए पतिआनी सोधन ॥
द्विजा पड़ाबहु जाए, वसुधारा धृत टारि भेल मातृपूजा ॥
कन्हाराम भन हेमकर विधिकर ।
शुभ शुभ कए छठि गेला, नृपति मण्डप पर ॥

गीत सोहाग--६८

आइलि घोबिनि दड़िआ हाथ कङ्कुरिआ हे ।
तोहरा के छएल गवार, कि कएल एत बेरिआ हे ॥
कएले बेरि अवेरिआ घोबिनि छिनरिआ हे ।
गौरिहि देहले सोहाग, होइछ बड़ बेरिआ हे ॥
घोबिनि पत्तारल ओरिआ, दए निअ डरिआ हे ।
सखन देव सोहाग, गुनल कत गरिआ हे ॥
कन्हाराम भन एहि बेरिआ, घोबिनिक ओरिआ हे ।
गौरिहि देल सोहाग, पाओल लाल सड़िआ हे ॥

बरिआत परिछय गीत गावति--६९

गज तुरङ्ग राजल तयकाल । बाजन विविध बाजए अन्धकाल ॥
चढ़ि चढ़ि जने भेल तैआर । जमा ओड़ा लए कमर कटार ॥
घाल दोसाळा अनेक पोसाक । पहिर लेल सभ एक शौं एक ॥
जगमग चीरा लेल पहीर । शुभ गजान चढ़ि लेल नृपवीर ॥

१ - एहि गीतक पाठ इतरततः भए गेल बुझाइस ।

मणिमय भूषन लेल लगाय । मुदित चलल परिछए जमाय ॥
पहुत कवित लड़ाखा भाट । नत्तक नूत करैत चल वाट ॥
आसमई गई होअ घनघोल । ककरो केओ भूक नहि बोल ॥
सुवर सवार घोर कुदाव । घाड़ा कुदाव अति परभाव ॥
'मोहरा' सुनि कतेक लोक धाय । भेल चमसान वरनि न जाय ॥
तेहि बिधि बलिष कएल पयान । लोकक लेल नहि रहल ठकान ॥
कन्हाराम अत भेल समान । तखनुक सोबा के कर बखान ॥

छन्द--७०

महल एक मशाल लेमल, सीड़िक कओने ठेकान यो ।
भेल तेहन इजोत पुरभरि, राति तहि पहिचान यो ॥
आतजबाजी कतेक तरहक, मुलुक मुलुकक आय यो ।
छुटैत होत अनोर बहु दिस, जएसे बत बहराय यो ॥
छालटेम अनेक भए गेल, रोसदी बहुभाति यो ।
देखि बर बरिषाते चकित, जगहि दिनकर राति यो ॥
एहन सगर नगर तमासा पहिने नृप कएल व्योत यो ।
नृप मन्दिर सह भवन मएँ कत, करए मजिक इजोत यो ॥

(प्राचीन^२ पुस्तकक '१११' संख्यक गीत सँ आगाँ)

गीतिका छन्द

गौरि शंकर व्याह, परम उछाह, मंगल बखान हे ।
जेहन मति गति, देल प्रभुपति, तेहन कएलहुँ मान हे ॥
कन्हाराम ई करत गोबर सुनिअ प्रभु त्रिपुरारि हे ।
टारि आरत कह कुतारथ, सुदृष्ट दृगहि निहारि हे ॥
जगतपति हर पुरिए अभिमत, सकल दोष निवारि हे ।
नाम अहरण डरण छज्जर, दिअ पदारथ पारि हे ॥

हरगौरि व्याह उछाह मङ्गल, गाव जे गुन कान हे ।
ताहि सुखसम्पत्ति सब विधि, पुज पौवहि मान हे ॥
सुचित चित दए, पढ़हि गावहि, धरहि शिवपद ध्यान हे ।
सकल दोष निवारि छज्जर, अभय देहि वरदान हे ॥

दोहा

राम अनेकक भीत संभ, वीरह प्रयाण बखान ।
गीत गीत के भास सौँ, गान करअ मतिमान ॥
तखन सुनत सलिलत परम, लागत अति अभिराम ।
छन्द भङ्ग पद करिअ जनु, सबकेँ कह कन्हाराम ॥

छन्द

हरजीवदासक तनय हलधर, तासु सुत कान्हाराम यो ।
'कर्ण' मेथिल वंश 'गङ्गकब', विदित जग सबठाम यो ॥
देश तिरहुत मध्य 'केउटि', प्राग अतिहि प्रशंस यो ।
तहाँ बसत कवि कन्हाराम, कत बसत बिप्र सुवंस यो ॥
इति श्री गौरीशंकर व्याह उत्सव चरित्र नाम नाटकं
करण कान्हारामदास विरचितं सम्पूर्णम् ॥



१—विशेष चर्चा । २ -- मूल पोथीक एहि पौनी सँ स्पष्ट अछि जे गीत सं० ७० सँ
आगू ४९ गीत गीत अग्रस्त अछि ।